ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

महानगरीय जीवन एवं परिवेश की यथार्थ दास्तान (महीप सिंह : ''यह भी नहीं'' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में)

The Reality of Metropolitan Life and Surroundings (Mahip Singh – "Yeh Bhi Nahi" in the Porspoctive of the Novel)

Paper Submission: 01/01/2021, Date of Acceptance: 15/01/2021, Date of Publication: 16/01/2021

भागोती कुमारी जांगिड
प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य)
शोध छात्रा,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर,राजस्थान, भारत

रामदेव सिंह भामू
सह. आचार्य,
राजकीय विज्ञान,
महाविद्यालय,
सीकर,राजस्थान, भारत

सारांश

कोई भी साहित्यकार अपने समाज या परिवेश से विलग हो ही नहीं सकता। सच्चा साहित्यकार अपने परिवेश के प्रति पूर्णतः सजग, संवेदनशील होता है। वह जिस परिवेश में जीता है उसी की साहित्य में अभिव्यक्ति करता हैं। उस परिवेश की सभ्यता, परम्परा, आदर्श, आचार–विचार, घटनाएं आदि ही उसके साहित्य की सम्पत्ति होते है। इस दृष्टि से महीप सिंह के 'यह भी नहीं' उपन्यास के मूल्यांकन से स्पष्ट हो जाता हैं कि उनका यह उपन्यास महानगरीय जीवन एवं परिवेश की त्रासदी का वृहद् आख्यान हैं। महानगरीय जीवन की विभिन्न समस्याओं, विसंगतियों एवं महानगरों में निवास के दौरान एकत्रित जीवनानुभवों को महीप सिंह ने प्रस्तुत उपन्यास में मार्मिकता एवं यथार्थता से विश्लेषित करने का प्रयास किया हैं।

No writer can be disengaged from his surroundings and society. True litterateurare conscious of their surrounding, Romains sensilive and expresses in his own literature the environment in which he lives. Civilization of that environment. Tradition, Ideal, Pickle-thoughts, Events etc. are the wealth of his literature. From this points of view. Mahip Singh's assessment of the novel 'yeh bhi nahi' makes it clear that he is an avoid literature of his surroundings. This novel is a tragedy of metropolitan life and surrounding is the narrative various problem of metropolitan life. Mahip Singh has attempted to analyze the poignancy and reality in the novel presented by Mahip Singh during his residency in the anomalies and melrosundefined.

मुख्य शब्द : महानगरीय जीवन, परिवेश, समाज, उपन्यास, आवास, साहित्यकार, संवेदनहीनता, नारी जीवन, दाम्पत्य संबंध, तनाव, जीवन मूल्य, यथार्थ, अमानवीयता।

Key Words: Metropolitan life, Surrounding, Society, Novels, Housing, litterateur, Ensensiteve, Feminine life, Virtuous relations, stress Life Values, Reality, Inhumanity.

प्रस्तावना

महानगर शब्द 'महा' और नगर इन दो शब्दों के योग से बना हैं। 'महा' का अर्थ 'बड़ा' और 'नगर' का अर्थ हैं 'गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मनुष्य की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशों के लोग रहते हैं।''1 सामान्यतः जहाँ अधिक लोग रहते हैं, जहाँ लाखों लोगों की सुनियोजितता होती हैं, भौतिक सुख –सुविधाएँ सहज रूप में उपलब्ध हो जाती हैं उसे महानगर कहा जाता हैं। हमारे देश में दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास जैसे शहर महानगर की श्रेणी में माने जाते है। डॉ. सीमा गुप्ता महानगर की परिभाषा कुछ इस प्रकार अभिहित करती है– ''वे नगर जो अपने विकास के द्वारा राष्ट्रीय – अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रूप से प्रभाव स्थापित कर लेते हैं महानगर की संज्ञा से अभिहित किये जाते हैं।''2 यह तो हुआ महानगरीय जीवन का संकीर्ण अर्थ जहाँ हमें देश, समाज, मानव के विकास के आसार दिखाई देते हैं परंतु महानगरीय जीवन के संकीर्ण अर्थ में वह सच्चाई नहीं हैं जो इसके विस्तारित अर्थ में हैं।

प्रत्यक्ष रूप से महानगर में प्रगति के कई साधन दिखते हैं परंतु अप्रत्यक्ष रूप से ये प्रगति के साधनमहानगरीय जीवन के लिए अभिशाप से कम नहीं हैं। महानगरीय जीवन व परिवेश की बेरोजगारी, आवास समस्या, प्रदूषण, भीड़ महंगाई, गंदगी, बेकारी, भ्रष्टाचार, यातायात, अपराधीकरण, आधुनिकता एवं पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव आदि समस्याओं से शहरों के मनुष्यों का जीवन संघर्ष से भरा होता हैं साथ ही अनेक पारिवारिक समस्याओं के चलते शहरी मानव तनाव से ग्रस्त रहता है।

महानगरीय जीवन एवं परिवेश

महानगरीय परिवेश में मनुष्य जीवन मशीनी यंत्र बनता जा रहा हैं। गाँवों में जो आत्मीयता, संवेदना, अपनापन, स्नेह होता हैं वहीं शहरों तक आते – आते अजनबीपन, अकेलेपन, घृणा, असंवेदना के रूप में दृष्टिगत होता है। महानगरीय परिवेश के यांत्रिक जीवन, खोखले संबंध, अर्थ प्रधानता असंवेदनशील व्यवहार पर महीप सिंह स्वयं लिखते है– ''महानगरों के जीवन का सबसे बड़ा संकट यह लगता है कि यहां मनुष्य का धीरे–धीरे अमानवीयकरण होता जा रहा है। सभी संबंध खुलकर व्यवसायीक बनते जा रहे हैं पूंजीवाद समाज व्यवस्था किस तरह समाज के जीते हुए व्यक्ति को असामाजिक, क्रूर, स्वार्थी, कूटिल और असुरक्षित बनाती है। इसका भयावह रूप महानगरों में विशेष रूप से दिखाई देता है।''3 इस प्रकार महानगरीय मनुष्य का जीवन विकास की इस दौड़ में चारों ओर संकट से घिरा रहता है। अर्थ की चाह में पारिवारिक रिश्ते झुठें और बेमानी लगने लगे हैं। सामान्यतः नगरीय लोगों का जीवन 'बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रूपया' वाली कहावत पर आगे बढ़ता हैं। महानगरीय परिवेश में आत्मकेन्द्रितता की भावना ने मनुष्य को इतना स्वार्थी बना दिया है कि सभी पारिवारिक या सामाजिक हित गौण एवं उसका स्वयं का हित एक तरफ। वह अपने स्वार्थ के लिए सभी संबंधों को दर किनार करते भी पीछे नहीं हटता। महानगरीय परिवेश के मानव जीवन की ऐसी ही स्वार्थवृत्ति, व्यक्तिवादी, अविश्वास, संवेदनहीनता के कारण नैतिक मूल्यों का पतन हुआ हैं। महानगर बोध वह बोध है जो महानगरीय परिवेश के कारण वहाँ के रहने वालों की जिंदगी में और जीवन चर्चा में ऐसा प्रभाव पैदा करें जिससे द्वंद्व, संकट और संत्रास पैदा होता है। कुल मिलाकर एक ऐसी नैतिक उथल–पुथल होती हो जिसके मध्य जिन्दगी का हर क्षण संघर्ष की यंत्रणा से गुजरता हो।''4 स्पष्ट है महानगरीय जीवन मनुष्य के जीवन का ऐसा परिवर्तन है जो उसे चारों ओर संघर्ष से भर देता है। मानव भौतिकता की इस दौड़ में मानवीयता को त्याग कर मशीन बन जाता है।

दूर से दिखने वाली महानगरीय चकाचौंध हर व्यक्ति को आकर्षित करती हैं। लेकिन इस आकर्षकता के पीछे छिपे अंधकार से वह बेखबर, अपनी परम्परा, परिवेश, से कटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करता जा रहा है जिससे शहरों की आबादी बढ़ी है, आबादी के बढ़ने से विभिन्न समस्याएं भी महानगरों में पैदा हुई है जैसे बेरोजगारी, प्रदूषण, महंगाई, गंदगी, यातायात, भीड़। सबसे भयावह प्रदूषण जिससे नगरीय जीवन के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में भारी गिरावट आई है। इन दुष्प्रभावों के साथ ही महानगरीय परिवेश एवं हो रहे विस्तार से संयुक्त परिवार टूट रहे है। हमारी सदियों की सभ्यता, संस्कृति, मूल्य आदि तार–तार हुए हैं। महानगरीय परिवेश से प्रभावित मानव जीवन के व्यवहार में अजीब तरह की व्यवसायिकता लक्षित हो रही है। संबंधों में मधुरता का अभाव, पारिवारिक वैषम्य, एकात्मकता और आत्मीयता के सूत्र पूरी तरह बिखरे हुए हैं। मां–बाप, पिता–पुत्री, भाई–बहन के संबंधों में अनाम दूरियाँ आने से खून के रिश्ते भी दरकने लगे हैं।

साहित्यावलोकन

1. साठोत्तरी हिन्दी कहानी में कथाकार महीप सिंह का योगदान – शगुफ़्ता कुरेशी (2008)
2. महीप सिंह का कथा संसार – डॉ. कमलेश सचदेव (2002)

अध्ययन का उद्देश्य

महीप सिंह के प्रस्तुत उपन्यास में महानगरीय जीवन एवं परिवेश की विराटता का बोध होता हैं एवं वहाँ के विविध पक्षों का संस्पर्श करना और उनकों आधुनिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करना, अभिव्यंजित अंश के माध्यम से वर्तमान महानगरीय परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति करना प्रस्तुत लेख का लक्ष्य रहा हैं।

हिन्दी उपन्यास साहित्य और महानगरीय जीवन व परिवेश

स्वाधीनता के पश्चात् औद्योगीकरण का विभाजन एवं शिक्षा से उत्पन्न स्वच्छंदता समकालीन उपन्यासकारों के लिए चुनौती बनकर आयी। उन्होनें साफ महसूस किया कि महानगरों में पाश्चात्य सभ्यता के संक्रमण, अंधानुकरण, मशीनीकरण एवं फैशन परस्ती के परिणामस्वरूप अकेलेपन, घुटन, टूटन, पीढ़ी में बढ़ता अंतर, शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, महंगाई, राजनीति के बदलते मूल्य जैसे कतिपय नये–नये प्रतिमान उभर रहे है। इन अप्राकृतिक और असंस्कारिकता को वाचा देने का काम तत्कालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में किया। हिन्दी कथा साहित्य की एक उल्लेखनीय विशेषता महानगरीय जीवन का चित्रण रहा हैं। आधुनिक साहित्यकारों ने अपनी अनेक रचनाओं में महानगरीय परिवेश एवं जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत किये हैं।

प्रमुख आधुनिक साहित्यकार जिन्होनें हिन्दी साहित्य में अपनी विभिन्न विधाओं के माध्यम से महानगरीय परिवेश एवं जीवन का चित्रण किया है–कमलेश्वर, मोहन–राकेश, राजेन्द्र यादव, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, मंजूल भगत, गोविंद मिश्र, यशपाल, महीप सिंह, दूधनाथ सिंह आदि ने अपने साहित्य द्वारा महानगरीय आधुनिक जिंदगी के सभी दृष्टिकोणों को कथात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की हैं। इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य की प्रस्तुति से अवगत करा दिया कि ऊपर से जितना सहज, सरल आकर्षक दिखने वाला महानगरीय जीवन उतना ही कष्टप्रद और दुःखमय व संघर्षों से भरा है। पाश्चात्य प्रभाव, शहरों की आबादी, राजनीतिक भ्रष्टाचार, संवेदनहीनता, स्वार्थपरता, अमानवीयता, प्रदूषण, आर्थिक विसंगतियां, राजनीति के बदलते मूल्य आदि दुष्प्रवृतियों ने महागनरीय जीवन को अन्दर–बाहर दोनों स्तरों पर बुरी तरह झकझोर दिया है।

हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में महानगरीय जीवन की अनेकों विभीषिकाओं को अपने कथ्य का आधार बनाकर यथार्थता से अभिव्यक्ति दी है। विस्तारित परिवेश के वर्णन में उपन्यास जैसी वृहद् विधा उपयुक्त ठहरती है जिसमें किसी भी घटना या जीवन का गहराई से चित्रण सम्भव है इसी के मध्यनजर हिन्दी साहित्य की उपन्यास विधा में महानगरीय परिवेश एवं वहाँ के जीवन का चित्रण अनेक लेखकों के उपन्यासों में दृष्टिगोचर हुआ है।

महीप सिंह : 'यह भी नहीं' उपन्यायस में महानगरीय जीवन एवं परिवेश

आधुनिक हिन्दी साहित्य में उपन्यास साहित्य सबसे लोकप्रिय और समृद्ध विधा हैं। उपन्यास का कलेवर विस्तृत होने के कारण उपन्यास लेखन का भी विस्तार हुआ है। सच्चा साहित्यकार अपने परिवेश के प्रति पूर्णतः जागरूक होता है वह जिस परिवेश में साँस लेता है उसी परिवेश को अपने साहित्य में शब्दबद्ध करता है। हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने जिस महानगरीय परिवेश में जीवन जीया है उसी परिवेश के यथार्थ चित्र अपने साहित्य में उकेरे है जिनमें महीप सिंह भी प्रमुख हस्ताक्षर हैं। महीप सिंह को महानगरीय बोध का कथाकार कहना भी गलत नहीं होगा क्योंकि महानगरीय जीवन उनकी रचनाओं का परिवेश है और मानसिकता भी। महीप सिंह ने महानगरीय पात्रों को उनकी मानसिकता के अंग के रूप में उनके जीवन को रचनाओं में चित्रित किया है।

महानगरीय परिवेश से महीप सिंह का गहरा संबंध रहा हैं। उनका बचपन कानपुर शहर में व वहीं शिक्षा ग्रहण कर सन् 1955 से 1963 तक में बम्बई की 'गुरूनानक खालसा कॉलेज' में इसके पश्चात सन् 1963 से 1993 तक दिल्ली के 'खालसा कॉलेज' में प्राध्यापक के पद पर कार्य किया, उसी दौरान सन् 1974–75 तक एक साल के लिए जापान के वन्साई विश्वविद्यालय में विजीटिंग प्रोफेसर के पद पर कार्य करते हुए महानगरीय जीवन व परिवेश का वृहत् आख्यान कहा जाने वाले उपन्यास 'यह भी नहीं'को पूर्ण किया। इस प्रकार अपने जीवन का अधिकांश समय इन (कानपुर, बम्बई, दिल्ली) महानगरों में गुजारने के कारण उनकी बहुत सी रचनाएं महानगरीय जीवन – परिवेश की दास्तान कहती है जो स्वाभाविक भी है क्योंकि सच्चा साहित्यकार अपने परिवेश के प्रति पूर्णत सचेत रहता है इसी सजगता और सतर्कता के कारण महीप सिंह के यह भी नहीं उपन्यास में महानगरीय परिवेश की यर्थाथ अभिव्यक्ति सम्भव हो पायी है क्योंकि अनुभूति की सच्चाई आज के साहित्यकारों की प्रमुख विशेषता है। उनकी उलझन, पड़ौसी, लिफ्ट, टकराव, घिरे हुए क्षण, पारदर्शक, सन्नाटा जैसी कहानियां महानगरीय परिवेश एवं जीवन के आंतरिक व बाहरी दोनों स्तरों को प्रस्तुत करती हैं।

महीप सिंह का 'यह भी नहीं' उपन्यास उनका प्रथम और महानगरीय जीवन शैली का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करने वाली रचना हैं। प्रस्तुत उपन्यास का कथ्य आज लगभग चार दशक बाद भी प्रासंगिक प्रतीत होता है क्योंकि इस उपन्यास में महानगरीय जीवन की आधुनिकता से प्रभावित एवं उलझे जटिल संबंधों, बेपनाह जिंदगी, टूटते दाम्पत्य संबंध, लोगों की व्यस्तता, पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता का प्रभाव, राजनैतिक दाँव–पेंच, नैतिक मूल्यों का पतन, आवास समस्या, प्रदूषण, बढ़ती आबादी, महंगाई, शिक्षण संस्थाओं का भ्रष्टाचार, संवेदनशून्य होते मानवीय संबंध, स्वार्थ, कुंठा, संत्रास, अकेलेपन, नारी स्वतंत्रता, अर्थ प्रधानता जैसी महानगरीय जीवन व परिवेश की विसंगतियों, विडम्बनाओं को उपन्यासकार ने पूर्णतः अनुभूति की सच्चाई से अभिव्यक्त किया है जो वर्तमान परिवेश के लिए भी प्रांसगिक है।

महानगरीय संवेदनहीनता

आजादी के बाद देश में काफी परिवर्तन हुए है परन्तु इस परिवर्तन का प्रभाव सबसे अधिक महानगरों पर पड़ा जहाँ मानव मशीन बनकर रह गया जिसमें ना संवेदना है ना आत्मीयता और न ही मानव की मानवता शेष हैं। नगरों की भीड़ और शोरगुल तथा अपनी व्यस्तता में मनुष्य इतना संवेदनहीन हो गया है कि किसी की मृत्यु या दुर्घटना पर उसके दुख में संवेदना या सहानुभूति की जगह उस दुःखी इंसान को ही कोसना शुरू कर देता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में ऐसे ही एक संवेदनहीन पात्र का वक्तव्य – ''मोटा आदमी बुड़बुड़ा रहा था– साला गाड़ी के नीचे आकर लोग तभी मरते हैं जब हमकू जल्दी जाने का होता है।''5 स्पष्ट है आज का मशीनी मानवपूर्ण रूप से स्वकेन्द्रित है उसे अपने काम से मतलब है अन्य किसी से कोई सरोकार नहीं रखना चाहता। अपने रास्ते में आने वाली छोटी–सी रूकावट भी बड़ी प्रतीत होती है। महानगरों की स्वार्थी प्रवृत्ति, ज्यादा से ज्यादा धन प्राप्ति एवं भाग–दौड़ तथा भोगवादी जिंदगी जीने की हवस ने व्यक्ति को संवेदनशून्य बना दिया। उपन्यासकार ने संवेदनशून्य एवं जड़ होते जाते मानव का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में यथास्थान किया है।

महानगरीय आवास

आज शहरों में जगह की समस्या सबसे बड़ी बनकर उभरी है जिसका कारण है लोगों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन जिसके कारण महानगरों की आबादी बढ़ी है परंतु उसी अनुपात में रहवास नहीं बढ़े परिणामस्वरूप महानगरों में साधारण जनको आवास के लिए संघर्ष करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में महीप सिंह ने आवास या मकान की समस्या शांता और सोहन के पुत्र टोनी के कथन से स्पष्ट किया है– ''बंबई में मकान मिलना क्या आसान बात है? बड़ी मोटी पगड़ी देनी पड़ती है।''6 कथन से स्पष्ट है कि महानगरों में मकान मिलना बड़ी ही मुश्किल है और मिल भी जाये जो इतनी महंगी कीमत पर कि आम आदमी के लिए वह कीमत अदा करना मुश्किल होती हैं जिसके कारण वे तंग–गलियों, छोटे–छोटे मकानों या चोलों, होटलों में जिंदगी जीने को मजबूर है। प्रस्तुत उपन्यास के अधिकांश पात्र इस समस्या से गुजर रहे है जिसकी यथार्थ अभिव्यक्ति उपन्यासकार ने महानगरीय परिवेश व जीवन को मध्यनजर रखते हुए की है।

दाम्पत्य संबंध

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही दाम्पत्य जीवन पवित्र रहा हैं परन्तु बदलते युग के साथ बदलते मूल्यों या विघटन होते नैतिक मूल्यों के कारण दाम्पत्य संबंधों में संघर्ष की गति उग्र होती जा रही है।

सामाजिक, आर्थिक या भावात्मक कारणों से दाम्पत्य जीवन की मधुरता, विश्वास, प्रेम समाप्त होकर कटूता, अविश्वास, घृणा, द्वेष जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ी है। प्रस्तुत उपन्यास में महीप सिंह ने दाम्पत्य जीवन के संघर्ष को शांता और सोहन के दाम्पत्य संबंधों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

महानगरीय परिवेश का गहनता से अध्ययन करें तो दाम्पत्य जीवन में संघर्ष को प्रमुख कारण अर्थ की आकांक्षा एवं व्यक्ति की महत्वकांक्षाएं ही रही हैं। यह भी नहीं उपन्यास में महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश में जीवन व्यतीत करने वाले शांता और सोहन के अर्थ आकांक्षा के कारण बनते बिगड़ते संबंधों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। दोनों जीवन साथी के रूप में ना होकर बिजनेस पार्टनर की तरह रहते हैं। जिस परिवार को सहयोग और प्रेम से चलाया जाता है उसी को वे दोनों आर्थिक इकाइयों में बंटवारा कर संचालन कर रहे हैं। लेखक कहता है–''उनके और शांता के बीच खर्च के पैसे–पैसे का हिसाब हैं। शांता अब होटल का अपना बिल अलग चुकाती है और वह अपना और टोनी का बिल चुकाता हैं। दोनों का दूध अलग–अलग आता हैं, पर टोनी के दूध का खर्च शांता देती हैं। .....साबुन, तेल व टूथपेस्ट आदि भी सबके अलग–अलग है।''7 इस प्रकार घर के छोटे–छोटे खर्चों को लेकर रोज दोनों के बीच झगड़े होते रहते है जिसका दुष्प्रभाव उनके बेटे (टोनी) पर पड़ता है। माता–पिता के बीच बढ़ती खाई से बालक टोनी अज्ञात भाव से उद्विग्न हो उठता है, उसका कोमल मन तड़प उठता है, मन घूटने लगता है जिसके परिणामस्वरूप वह अबोध बालक कुंठित, क्रुद्ध, क्षुब्ध, हिंसक और संस्कारहीन होता जाता है। उसका जीवन ठहर–सा जाता है। वह जिस वत्सल प्रेम का हकदार था वो ना मिलने से वह भीतर–ही–भीतर महसूस करने लगा कि माता पिता का प्रेम उसके नसीब में नही है और माता–पिता दोनों को उसकी कोई परवाह नहीं। माता–पिता के बीच उत्पन्न तनाव व अलगाव से वह हिंसक होता गया। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि दाम्पत्य संबंधों में आया तनाव, संघर्ष उस संबंध को तो खत्म करता ही है उससे जुड़े अन्य संबंधों में भी तनाव भर देता है विशेषतः अपनी संतान के भविष्य को खतरे में ले आता हैं जैसा शांता और सोहन की वजह से टोनी के साथ हुआ।

प्रस्तुत उपन्यास में महानगरीय परिवेश व जीवन में दाम्पत्य संबंधों के टूटने का एक कारण पाश्चात्य प्रभाव एवं पढ़ाई का वैषम्य भी रहा हैं। 'यह भी नहीं' उपन्यास में प्रो. पाठक (जो शहर में नौकरी करता है) के दाम्पत्य जीवन में कटुता, अलगाव का कारण पाठक जी की पत्नी का कम पढ़ा हो या अनपढ़ होना है जिसे वह अपने साथ भी नहीं रखना चाहता है उसका मानना है कि उसे साथ रखकर वह सबके मध्य हंसी का पात्र बन जाएगा। वह कहता है– ''मैं यहाँ की नौकरी छोड़कर गाँव में जाकर खेती–किसानी करना पसंद करूँगा पर उन्हें यहाँ बुलाकर अपने मित्रों और सह–कर्मियों के बीच हीन–भावना की सतत पीड़ा सहते हुए जीना नहीं पसंद करूँगा।''8 इस प्रकार महानगरीय परिवेश और आधुनिक जन जीवन से प्रभावित होकर प्रो. पाठक जैसे लोग अपनी पुरानी परम्परा, संस्कारों से किनारा करते हुए पत्नी पर अनपढ़ का कलंक लगाते हुए पत्नी एवं बच्चों से दूरी बना लेते हैं। शादी को वह बचपन की भूल बताकर अपने बच्चों व पत्नी से अलग रहना चाहता है क्योंकि उसके विचार से वह पढ़ा–लिखा आधुनिक सोच वाला व्यक्ति है और पत्नी पुराने ख्यालों की अनपढ़ स्त्री है। इस प्रकार के विचार दाम्पत्य संबंधों के टूटने का प्रमुख कारण बनते जा रहे है जो महानगरीय जीवन की आधुनिकता पर प्रश्न चिह्न लगा रहें हैं।

महानगरीय परिवेश एवं नारी जीवन

बीसवीं सदी महिला जागरण की सदी रही हैं। महिलाओं ने संघटित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ी जिससे आधुनिक महानगरीय परिवेश की नारी का नया रूप सामने आया हैं। आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप नारी की मानसिकता, व्यक्तित्व में बदलाव एवं नवीन दृष्टि विकसित हुई हैं वह रूढ़ियों के बंधन से मुक्त होकर अपना अलग अस्तित्व कायम करना चाहती हैं। नारी में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास का निर्माण हुआ हैं, मान्यताओं व परम्पराओं को नकारते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान चाहती हैं। आज के महानगरीय परिवेश में जीवन व्यतीत करने वाली नारी प्राचीन नारियों के तरह पुरूषों के उपयोग की निर्जीव वस्तुन रहकर स्वावलंबी बन गई है। वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल बदलकर जीने में विश्वास रखती है। 'यह भी नहीं' उपन्यास की शांता इसी महानगरीय परिवेश की आधुनिक नारी का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती है। शांता का अपने पति सोहन को कहा गया कथन द्रष्टव्य है–''यही की मैं एक पुरानी हिन्दुस्तानी औरत की तरह रहूँ, चूल्हें–चक्की को ही अपना जीवन समझूँ। बच्चे पैदा करूँ और सारा जीवन उन्हें पालती–पोसती रहूँ। पति को परमेश्वर मानूँ और अपने आपको उनके चरणों की दासी समझूँ।.....मुझसे इस तरह का जीवन नही जिया जाएगा।''9 इस प्रकार आज के महानगरीय परिवेश की कामकाजी नारी उसकी स्वतंत्रता का हनन करने वाली मान्यताओं, परम्पराओं को नकार कर स्वतंत्रतापूर्वक जीना चाहती है। प्रस्तुत उपन्यास की शांता भी आज की आत्मनिर्भर नारी के रूप में घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर नौकरी कर स्वावलंबी नारी का परिचय देती हैं एवं अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है।

अध्यापकीय जीवन एवं शिक्षण संस्थानों का भ्रष्टाचार

महीप सिंह मूलतः एक अध्यापक थे उन्होंने अत्यंत सफलता के साथ अपने जीवन के अनेक वर्ष (1955–1993) तक अध्यापन कार्य में व्यतीत किये थे स्वाभाविक है तभी उनकी रचनाओं में अध्यापकीय जीवन झलकता है। अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित विषय पर वे अपनी रचनाएं ना लिखते तो ही आश्चर्य होता। उन्होने अपनी अनेक रचनाओं में अध्यापकीय जीवन को अनेक रूपों में रेखांकित किया है। ट्यूशन, उलझन, पुत्र, धुँधले चेहरे, निशान जैसी कहानियां अध्यापकीय जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखी कहानियाँ है जिसमें अध्यापकों की लगभग सभी समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'यह भी नही' उपन्यास में महीप सिंह ने सोहन और पंकज के अध्यापकीय जीवन में आने वाली विभिन्न समस्या जैसे आवास की, वेतन की, नौकरी की अनिश्चितता, चापलूसी

आदि के कारण सम्पूर्ण अध्यापक वर्ग के संघर्ष का चित्रण किया है। अध्यापन कार्यकाल के दौरान उन्होंने जान लिया था कि कॉलेज संस्थान भ्रष्ट प्रबन्धकों के षड़यंत्रों का गढ़ होती हैं। प्रस्तुत उपन्यास का पात्र पंकज सद्‌चरित्र, ईमानदार एवं स्वाभिमानी पुरूष है। जब पंकज कॉलेज के प्रिंसिपल और सेक्रेटरी के अनुचित कार्य में उनका सहयोग नहीं करता है एवं भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज उठाता है तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सेक्रेटरी का यह कथन संस्थानों की भ्रष्टता को स्पष्ट कर देता है– ''नौकरी देते हैं जो व्यक्ति ठीक से काम नहीं करेगा वह निकाल दिया जायेगा।''10 इस संस्थान के भ्रष्ट सेक्रेटरी का समर्थन न करने पर पंकज को कॉलेज और कॉलेज की ओर मिले मकान से निकालकर बेघर और बेरोजगार बना दिया जाता है। ऐसी संस्थानों में ठीक से काम करने का मतलब मेहनत या ईमानदारी से काम करना नहीं वरन संस्थानों में सत्ताधारी लोगों के फैसले का समर्थन करना होता हैं, उनके शोषण को स्वीकार करना एवं उसके शोषण में भागीदार हो जाना है। महीप सिंह ने अपने अध्यापन कार्यकाल के दौरान शिक्षण संस्थाओं के भ्रष्टाचार, षड्‌यंत्रों को देखा, महसूस किया या कहे भोगा उसी की यथार्थ अभिव्यक्ति प्रस्तुत उपन्यास में हुई है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान की बदलती परिस्थितियों, बदलते जीवन मूल्यों के बीच, आधुनिक मानव के संघर्षपूर्ण जीवन को महानगरीय परिवेश के बीच जन्म लेती अनेकानेक समस्याओं एवं वैश्लिष्ट मनः स्थितियों को पहचानने की जो मजबूत पकड़महीप सिंह को है, वह विशिष्ट है जो 'यह भी नहीं' उपन्यास में दृष्टिगोचर हुई है। प्रस्तुत उपन्यास में महानगरीय परिवेश में जी रहे व्यक्ति की पीड़ा एवं उसके संघर्ष से भरे जीवन का चित्रण यथार्थ रूप में खुलकर हुआ हैं।

वैयक्तिक अनुभवों एवं जीवन दृष्टि के आधार पर महीप सिंह ने 'यह भी नहीं' उपन्यास में महानगरीय परिवेश में अपनी पहचान खोते जाने वाले व्यक्ति की पीड़ा, संवेदनशून्यता, संबधों का व्यवसायीकरण, असामाजिकता, मकान की समस्या, आर्थिक समस्या, मंहगाई, प्रदूषण, शिक्षण संस्थानों का भ्रष्टाचार, अध्यापक वर्ग का संघर्ष, स्वतंत्र–विद्रोही नारी, टूटते दाम्पत्य संबंध, महत्त्वकांक्षी नारी, आदि विभिन्न पहलुओं का जीवन्त चित्रण किया है। इस प्रकार स्पष्ट है प्रस्तुत उपन्यास महानगरीय जीवन एंव परिवेश का वृहत् आख्यान हैं जिसमें महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश के जीवन की त्रासदी को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, सम्पादक–रामचन्द्र वर्मा – पृ.–516*
2. *समकालीन हिन्दी उपन्यास, महानगरीय बोध–डॉ. सीमा गुप्ता–पृ.–07*
3. *महीप सिंह का कथा संसार, डॉ. कमलेश सचदेव– पृ.–35*
4. *महानगर बोध, डॉ. भगवान दास वर्मा, कथाकार महीप सिंह, सं. डॉ. गुरचरण सिंह – पृ. – 67*
5. *यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ. – 85*
6. *यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ. – 23*
7. *यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ. – 53*
8. *8यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ – 127*
9. *9 यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ. – 82*
10. *10 यह भी नहीं, डॉ. महीप सिंह – पृ. – 219*